

पद १३७

(रागः खमाज - तालः त्रिताल)

जय हो सकलमतीं, तुम्हां जगिं मान्यता । पूज्यता सज्जन
सुवंद्यता ॥ध्रु.॥ स्वतंत्रता अखिल जनीं बोध सत्ता । धीमता
अनुपम शम शांत चित्तीं निरहंता ॥१॥